डॉ. रामबहादुर चौधरी चंदन की गजलें

ग़ज़ल -1

जुबां पे आंख रखकर दर्द दिखलाये नहीं जाते

सुनहरे ख़्वाब अश्कों से तो नहलाये नहीं जाते

शब्द क्रांति
अंतर्राष्ट्रीय मासिक पत्रिका
www.shabdkrantipatrika.in

मुहब्बत चीज क्या है किस तरह होती है क्या जाने

तरीके प्यार करने के तो सिखलाये नहीं जाते

सितम ढ़ाते रहे हैं बेकसों पर आदमी ऐसे

दबा कर ह़क किसी का मर्द कहलाये नहीं जाते

भुलाने की बहुत कोशिश हुई है बारहा लेकिन

खिलौने से दिले - दीवाने बहलाये नहीं जाते

करे कोशिश जमाना दिल से दिल को दूर करने करने की
लकीरें खींच कर पानी तो अलगाये नहीं जाते

दिये हैं आपने जो ज़ख़्म उनका क्या करें बोलो
जिगर के ज़ख़्म हाथों से तो सहलाये नहीं जाते

ख़ुदी के रंग में डूबी सिमटती जिन्दगी लेकर
जहां में बेख़ुदी के रंग बरसाये नहीं जाते

***

ग़ज़ल -2

शब्द क्रांति
अंतर्राष्ट्रीय मासिक पत्रिका
www.shabdkrantipatrika.in

हुआ मायूस मौसम भी तुम्हारे जाने से
बहारें लौट जाती हैं मेरे ठिकाने से

उतरता चांद अब छत पर नहीं बुलाने से
नहाये चांदनी में हम नहीं जमाने से

बहुत नाज़ुक है दिल कह दे कोई जमाने से
मुहब्बत और गम छिपते कहां छिपाने से

समा जाते रगों में जिन्दगी के कुछ लम्हे

कहां वो भूलते हैं चाहकर भुलाने से

गई है जो जवानी जिन्दगी की बाहों से

कहां आती है वह फिर लौटकर बुलाने से

दिया आकाश उड़ने के लिए जिसे हमने

उसी ने खींच ली माटी मेरे सिरहाने से

***

ग़ज़ल -3

शब्द क्रांति
अंतर्राष्ट्रीय मासिक पत्रिका
www.shabdkrantipatrika.in

छूने लगे हम आसमां ऊंचाईयों के साथ

बढ़ती गई हैं दूरियां भी खाइयों के साथ

मस्ती लिए आई यहां इस दौर की तहजीब

मातम मनाते लोग भी शहनाइयों के साथ

दुनिया के मेले में अकेले हैं यहां सब लोग

जिन्दा यहां जीते सभी तनहाइयों के साथ

चंगा कहां कोई यहां, लगते सभी बीमार

आया नया ये दौर है बीमारियों के साथ

ख़ुद पर भरोसा है नहीं,किस पर करें विश्वास

लड़ते रहे हैं हम सदा परछाइयों के साथ

चालाक इतने हो गए हम भी समय के साथ

हैं प्यार भी करते मगर चालाकियों के साथ

***

ग़ज़ल-4

शब्द क्रांति
अंतर्राष्ट्रीय मासिक पत्रिका
www.shabdkrantipatrika.in

वक़्त किसी का सगा है क्या ?

तुमको नहीं यह ठगा है क्या ?

साल नया आ गया देखो

दिल भी हुआ कुछ नया है क्या ?

लूट गया वो हसीं सपने

फिर भी कहो तू जगा है क्या ?

तोड़ दिया वो यकीं दिल का

इससे बड़ा कह दगा है क्या ?

अश्क़ कहो क्यों है आंखों में

तुमको भी उसने छला है क्या ?

तुमसे जमाना ख़फ़ा क्यों है

प्यार भी तुमने किया है क्या ?

प्यार किया है तो चुप रहना

बोल दिया फिर मजा ही क्या ?

शब्द क्रांति
अंतर्राष्ट्रीय मासिक पत्रिका
www.shabdkrantipatrika.in

प्यार बिना आदमी कोई

चैन से भी जी सका है क्या ?

***